manthan

मंथन

वर्ष 3 अंक 1

15 अगस्त, 2008

स्टाफ़ क्लब,

आई. एच. बी. टी. पालमपुर

मंथन

(Independence Day Special)

स्टाफ क्लब, आई. एच. बी. टी. पालमपुर

वर्ष 3 अंक 1 15 अगस्त, 2008

मंथन

स्टाफ क्लब, आई. एच. बी. टी. पालमपुर
वर्ष 3 अंक 1 15 अगस्त, 2008

आमुख

मंथन आपके स्टाफ क्लब की पत्रिका है, इसका 9वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोलकर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते आप उन्हें मंथन के माध्यम से लघु लेख व कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता व अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है—भावनाओं का मंथन।"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए प्रविष्टियां देने की कृपा करें ताकि मंथन का अगला अंक समय से निकाला जा सके। भाषा हिन्दी या अंग्रेजी हो सकती है।

इस अंक में प्रविष्टियां देने वालों व सहयोग प्रदान करने वालों का स्टाफ क्लव सदैव आभारी रहेगा।

देवेन्द्र ध्यानी

Pride of India

Date of Birth: Sep 28, 1982
Residence: Chandigarh (India)
Height(cm/ft in): 173cm / 5'8"

Place of Birth : Dehra Dun (India)
Event(s): Men's 10 m Air Rifle
Weight(kg/lbs): 65 kg / 143 lbs

Abhinav Bindra won India's first ever individual Olympic Gold Medal in men's 10 m Air Rifle shooting on Monday, August 11, 2008 at Beijing Olympic.

विषय सूची

इस अंक में

लेख	लेखक	पृष्ठ
सिपाही	संगीता सिंह	5
Biography of Dr. Shanti Swarup Bhatnagar	**Mathan Team**	**6**
बुरांश	अंजली उनियाल	7
Painting	**Ekta Thakur**	**8**
चाह	हरमेश	9
Did You Know ?	**Mathan Team**	**10**
इक्कीसवी शताब्दी में जाना है	दीदार सिंह	11
Biography of Dr. C.V. Raman	**Mathan Team**	**12**
आरती गृह लक्ष्मी जी की	अखिलेश	13
Children section	**	14
माँ	अक्षय पटियाल	15
तितली एवं भैया	पूजा मैत्रा पति	16
Painting	उत्कर्ष सिंह	17
	Indu	**18**
	Ayush	**19**
	Vidushi	**20**
	Rohan	**21**
	Rohit	**22**

सिपाही

एक जंग शुरु करनी होगी,
अपनी सभ्यता, संस्कृति, एकता के लिए।
हर एक को शुरु करनी होगी, खुद से एक लडाई।
हर एक आदमी को बनना होगा सिपाही।।

यूँ ही जो आपस में लडते रहे तुम
आने वाले बचपन को, कौन सा
मज़हब, कौन सा धर्म दोगे तुम ?
कोई दूसरा नहीं आकर एकता सिखायेगा
खुद ही बढ़ कर, गले दूसरों को लगाना होगा।।

यूँ ही नहीं मिलेगा सपनों का संसार
हाथ नहीं आयेगा कोई जादुई चिराग।
हर एक को पहल करनी होगी
यह उठी अंगुली खुद पर ही मोडनी होगी।।

यूँ ही आँखें बन्द करने से न होगा।
यूँ मूँह मोडने से न होगा।
आज यह हादसे सडकों पर हैं
कल तुम्हारे अपने घर में होंगें।।

यूँ हर काम को दूसरों पर छोड दोगे तुम
हर चीज के लिए दूसरों को दोष दोगे तुम
जब फैल जायेगा चारों तरफ भ्रष्टाचार
तो क्या महफूज रख सकोगे तुम, अपने घर और दीवार।।

समय रहते ही हम सब को चेतना होगा
हर एक को शुरु करनी होगी खुद से ही जंग
हर एक को शुरु करनी होगी, खुद से एक लड़ाई
हर एक आदमी को बनना होगा सिपाही।।

संगीता सिंह

Biography of Dr. Shanti Swarup Bhatnagar

Born - 21 February 1894

Died - 1 January 1955

Achievements - A noted scientist of India, Dr Shanti Swaroop Bhatnagar was appointed the first director-general of the prestigious Council of Scientific and Industrial Research. He also hold the credit of building 12 national laboratories like Central Food Processing Technological Institute at Mysore, National Chemical Laboratory at Pune and so on.

Dr Shanti Swaroop Bhatnagar was a distinguished Indian scientist. He was born on 21 February 1894 at Shahpur, which is located in Pakistan in present times. His father passed away sometime after the birth of Shanti Swarup Bhatnagar. As such, he spent his childhood days with his maternal grandfather who was an engineer and it was here that he developed an interest in science and engineering. Read on this biography to know more about the life and professional history of Dr Shanti Swaroop Bhatnagar.

As a child, Bhatnagar loved to construct mechanical toys. In the home of his maternal family, he also developed an interest in writing poetry and his one act play in Urdu 'Karamati' won the first prize in a competition. After completing his master's in India, Shanti Swaroop Bhatnagar headed to England for a research fellowship. Here he got his D. Sc degree from the London University in the year 1921. When he came back to his native country, Bhatnagar was presented with a proposal of professorship at the renowned Benaras Hindu University.

Dr Bhatnagar was knighted by the British Government in the year 1941 as an award for his research in science, whereas, on 18 March 1943 he was selected as fellow of the Royal Society. Though his area of interest included emulsions, colloids, and industrial chemistry, but his primary contributions were in the spheres of magneto-chemistry. He also made a melodious kulgeet i.e. University song, which is still sung with great pride before any function in his university.

Prime Minister Jawaharlal Nehru himself was an advocate of scientific development. After India gained freedom from British rule in 1947, the Council of Scientific and Industrial Research was established under the chairmanship of Dr. Bhatnagar, who was appointed its first director-general. In the coming years, he set up 12 national laboratories like Central Food Processing Technological Institute at Mysore, National Chemical Laboratory at Pune, the National Metallurgical Laboratory at Jamshedpur and many others.

बुरांश

बसंत ऋतु की, इस खामोश शाम में
जब, सब रुक–सा गया है
दूर किसी पक्षी का
अपने प्रियतम को निमंत्रण
वादी को गुंजित कर रहा है,
तब, ओ बुरांश!
मैं चाहती हूँ, तुम पर कोई गीत बनाऊँ
पर, तुम्हारे अनुपम सौंदर्य को,
शब्दों में कैसे वर्णित कर पाऊँ
शायद, पहाड़ों को बसंत का, एक उपहार हो तुम
अब तुम ही बताओ?
क्या वीरान घाटियों में मुस्कुराता
लज्जा से लाल किसी पहाड़ी लड़की का
पहला–पहला प्यार हो तुम?
या फिर, सूने–वीरान जंगल का श्रृंगार हो तुम
उधर हिम शिखरों से पिघलने लगी
इधर वृक्षों पर सुगबुगाहट–होने लगी
बदलता मौसम दस्तक देने लगा
कोंपलों में भी स्पन्दन होने लगा
फूट पड़ी एक साथ, अनेक कलियाँ
लाल रंग से लद गई, हरी–हरी यह डालियाँ
ओ बुरांश! तुम तो
विदा देते शिशिर को
आगमन पर बसंत के
एक अनोखा त्यौहार हो तुम!

अंजली उनियाल

Ekta Thakur

चाह

जैसा इन्सा चाहे जग में
चल आ मन वैसा तू खुद बन जा !
सब जन प्यार करें तुझको
ऐसा मानव चल आ बन जा !!

तू अच्छाई से जाना जाए
कभी बुरा भी हो, यह बात न हो !
मानवता से हो पहचान तेरी
कोई धर्म तेरा, कोई जात न हो !!

नेकी ही तेरा पथ दर्शक
सद्भाव ही हो पहचान तेरी !
हो दया धर्म तेरा लक्ष्य
उपकार ही हो जी जान तेरी !!

सत्य अहिंसा और कर्तव्य
निष्ठा ही गुणगाण तेरा !
तू दीन दयालु कहलाए
हो अच्छाई सदा महमान तेरी !!

तू क्रोध, नफरत को पहचाने
ना इर्षा तुझे सताए कभी !
न द्वेष कभी महमान बने
तू प्यार से मीत बनाए सभी !!

जो अन्जानों ने बिखराए
वो कांटे–कांटे तू चुन दे !
जो इन्सानियत ता–तार हुई
चल प्यार से इस को फिर बुन दे !!

दूजे का दुख हो अपना दुख
गैरों का दर्द भी अपना हो !
कुछ समाधान की बात करें
निभर्य निडर एक सपना हो !!

जातों महज़बो से दूर रहें
इक धर्म तेरा हो मानवता !
अच्छाई को बल दे इतना
कि दूर भगाए दानवता !!

नफरत ने पाट दी जो राहें
चल सेतु उसका तू बन जा !
सब जन प्यार करें तुझ को
ऐसा मानव चल आ बन जा !!

जैसा इन्सा चाहे जग में
चल आ मन वैसा पहले खुद बन जा !
सब जन प्यार करें तुझको
ऐसा मानव चल आ बन जा !!

हरमेश

Did You Know ? that.. (about INDIAN RAILWAYS)

1. The first train ran between Bombay to Thane on the l6th of April 1853.
2. IR is the 2nd Largest Railway network in tke world.
3. IR has about 62000 kms of Track.
4. IR employs about 1.6 million people.
5. IR carries about 10 million passengers & 1 million tonnes freight daily.
6. IR runs about 11000 trains daily
7. IR has 7092 railway stations.
8. The longest journey on the IR is from Jammutawi to Kanhyakumari a distance of about 3751 kms covered by Himsagar express in about 66 hours.
9. The longest railway platform is at Kharagpur & is 2732ft in length.
10. NEHRU SETU on river Sone is the longest bridge & is 10044ft in length.
11. The longest tunnel is between Monkey hill & Khandala & is 7000ft in length.
12. Calcutta METRO is the Ist & only underground railway system in India.
13. Computerised reservation system started at Delhi In 1986.
14. IR's first electric train ran in 1925 from Bombay.
15. Toilet on trains were introduced in 1891(Ist Class) & 1907(Lower classes).
16. IR runs 9 pairs Rajdhani & 13 Shatabdi express trains.
17. 42 Railway companies operated in the country before Independence.
18. IR Is presently divided into 9 Zonal Railways.
19. IR has around 7800 locomotives, 40000 coaches & 326000 wagons.
20. FAIRY QUEEN (b -1855) the oldest preserved locomotive is kept at NRM.
21. The manufacturer of steam locomotives came to a close In 1972.
22. Diesel locomotives arc manufactured at DLW Varanasi.
23. Electric Iocomotives are manufactured at CLW Chittaranjan.
24. Coaches are manufactured at ICF/Madras, RCF/Kapurthala & BEML/Bangalore.
25. IR has 4 gauges of Track - BG (5'6") MG (1 metre) NG (2).
26. IR's fastest train is the Bhopal Shatabdi which runs at speeds upto 140 kmph.
27. Ist AC, 2nd AC, 3rd AC, AC Chair Car IInd sleeper & IInd ordinary are the various classes of travel on the IR.
28. IR's only Rack & Pinion system type of line is from Mettupalayam to Conoor on SR.
29. The National Rail Museum at New Delhi was set up in 1977.

Source: National Rail Museum, New Delhi, http://meerutup.tripod.com/railways.htm

इक्कीसवी शताब्दी में जाना है

सवेरे सवेरे एक साहब,
हमारे पास आए और बोले
दस रुपये दीजिये,
मुझे इक्कीसवीं शताब्दी में जाना है।

मैं बोला सिर्फ दस रुपये में?
वह बोला लोकल से जाउंगा।
जी हां!
एक बड़ा पाव खाऊँगा और लोकल से जाऊँगा।
मुम्बई की लोकल ट्रेन की दमघोंटू भीड़ से,
यदि बच पाऊंगा, तो सीधा
इक्कीसवीं सदी में, लैंड कर जाऊंगा।

अगर दस रुपये आपको कम लगते हैं,
तो सौ–सौ के दस दे दीजिए।
ताज़महल में लंच करूंगा,
और टैक्सी से जाऊगा।
मैं समझा नहीं पूछा,
यह सब तुम कब से कर रहे हो?
और अब तक तो इक्कीसवी शताब्दी में पहुंचे
नही?

हिकारत भरी दृष्टि डाल कर बोल वे,
तुम्हारे जैसों से रोज़ दस दस रुपये लेकर
दिन गुज़ार रहा हूं,
और इसी तरह
इक्कीसवीं सदी की ओर कदम बढ़ा रहा हूं।

बड़ी हिम्मत के साथ अन्तिम बार पूछा,
लेकिन क्यों
जाना चाहते हो तुम इतनी जल्दी इक्कीसवीं
सदी में?

इस बार दुखी हो गये वो!
प्लकों से गिरते आंसू रोक कर बोले,
मगर बेरोजगार हूं।
मां बाप मेरी बेरोजगारी से परेशान हैं।
रोज़ एक एक रुपया देते हुए
हजारों ताने देते हैं।

दूसरी तरफ़ ये दुनिया वाले
रोज इक्कीसवी सदी में जाने के लिये,
''वाय टू के'' पर करोंड़ों रुपये
खर्च कर देते हैं।

इक्कीसवी सदी में शायद,
यह महंगाई न हो,
भ्रष्टाचार न हो,
अनाचार न हो,
एक वोट से गिरने वाली सरकार न हो।
राजनीति में अपराध मिक्स न हो,
क्रिकेट का कोई मैच फिक्स न हो।

नई सदी का हर नया दिन,
शायद इतनी
समस्याओं वाला न हो।
लाइये!
जल्दी से दस रुपये लाइये।
न देना हो तो मत दीजिए,
मगर इस तरह मेरा
दिमाग न खाइये।

दीदार सिंह
स्रोतः इन्टरनेट

Biography of Dr. C.V. Raman

Born: November 7, 1888

Died: November 21, 1970

Achievements: He was the first Indian scholar who studied wholly in India received the Nobel Prize.

C.V. Raman is one of the most renowned scientists produced by India. His full name was Chandrasekhara Venkata Raman. For his pioneering work on scattering of light, C.V. Raman won the Nobel Prize for Physics in 1930.

Chandrashekhara Venkata Raman was born on November 7, 1888 in Tiruchinapalli, Tamil Nadu. He was the second child of Chandrasekhar Iyer and Parvathi Amma. His father was a lecturer in mathematics and physics, so he had an academic atmosphere at home. He entered Presidency College, Madras, in 1902, and in 1904 passed his B.A. examination, winning the first place and the gold medal in physics. In 1907, C.V. Raman passed his M.A. obtaining the highest distinctions.

During those times there were not many opportunities for scientists in India. Therefore, Raman joined the Indian Finance Department in 1907. After his office hours, he carried out his experimental research in the laboratory of the Indian Association for the Cultivation of Science at Calcutta. He carried out research in acoustics and optics.

In 1917, Raman was offered the position of Sir Taraknath Palit Professorship of Physics at Calcutta University. He stayed there for the next fifteen years. During his tenure there, he received world wide recognition for his work in optics and scattering of light. He was elected to the Royal Society of London in 1924 and the British made him a knight of the British Empire in 1929. In 1930, Sir C.V. Raman was awarded with Nobel Prize in Physics for his work on scattering of light. The discovery was later christened as "Raman Effect".

In 1934, C.V. Raman became the director of the newly established Indian Institute of Sciences in Bangalore, where two years later he continued as a professor of physics. Other investigations carried out by Raman were: his experimental and theoretical studies on the diffraction of light by acoustic waves of ultrasonic and hypersonic frequencies (published 1934-1942), and those on the effects produced by X-rays on infrared vibrations in crystals exposed to ordinary light. In 1947, he was appointed as the first National Professor by the new government of Independent India. He retired from the Indian Institute in 1948 and a year later he established the Raman Research Institute in Bangalore, where he worked till his death.

आरती गृह लक्ष्मी जी की

जय, जय हो, ओ लक्ष्मी रानी,
करती हो तुम मनमानी
बात हमारी, हरदम टालती,
ओ रानी हम उतारें तेरी आरती

तुम समान बलशाली कोई जग में नहीं दूजा
हम तो हैं बलहीन, तुम्हारी करें किस तरह पूजा
हमसे खाना बनवाने वाली, बर्तन मंजवाने वाली
नौकर सा हमको दुत्कारती, ओ रानी हम उतारें तेरी आरती

तुम बच्चों की अम्मा प्यारी, सास की बिटिया प्यारी
कभी अगर तुम रूठो, कर दो खटिया खड़ी हमारी
हमको अक्सर हड़काने वाली, ऑखें दिखाने वाली
गुस्सा तुम हम पर उतारती, ओ रानी हम उतारें तेरी आरती

धूप दीप कुछ तुम्हें न सोहे, और न कपूर बाती
क्रीम पावडर वाली, देख–देख के तुम कभी हरषाती
यूँ तो लगती हो भोली भाली, लेकिन तुम हो एक दूनाली
बोली की गोली हरदम मारती, ओ रानी हम उतारें तेरी आरती

पति–पत्नी का इस जग में, है वही पुराना नाता
बैठी–बैठी खाती पत्नी, पति दिन रात कमाता
निस दिन मौज उड़ाने वाली, हमको तरसाने वाली
सारी कमाई तुम डकारती, ओ रानी हम उतारें तेरी आरती

ये सारी धन–दौलत तेरी, तेरा चाँदी–सोना
हम तो केवल इतना चाहें, तुम नाराज न होना
हमको उल्लू बनाने वाली, घर की है लक्ष्मी आली
सेवक को काहे फटकारती, ओ रानी हम उतारे तेरी आरती

अखिलेश

Children Section

माँ

क़र्ज़ माँ □ा है बड़ा, □ानते ये हम सभी
हैं बहुत उप□ार इस□े, हम न गिन स□ते □ भी

□ष्ट में देखे हमें तो, रोएँ इस□े भी नयन
सारे दिन □ी छोड़िए, रात न □रती शयन

आ□ भी सारे □हा□□ा, ए□ ही मन्तव्य है
मातृ सेवा हर युगों □ा, श्रेष्ठतम □र्तव्य है

ईशभक्ति में न शक्ति, माँ □ी सेवा में □ो है
स्वर्ग न आनन्द देता, मातृ सेवा में वो है

अपनी माँ □ो भूलता □ो, वह बड़ा ख़ुदग़र्ज़ है
मातृ सेवा इस □हा□में, हर मनु□ □ा फ़र्ज़ है

अक्षय पटियाल
कक्षा सातवीं

तितली

तितली तितली तुम उड़ती रहती हो
हमको मधु नहीं देती
यह अच्छी बात नहीं
हमसे दोस्ती करोगी
तो अच्छी बात होगी
हमें मधु दोगी
तो अच्छी बात होगी।

भैया

भैया आया झोला लाया
झोले में पोलो लाया
सब बच्चों को पोलो खिलाया
और बच्चों को खूब हँसाया।

I Love my mother
I Love my father
I Love my doll
I Love my ALL

पूजा मैत्रा पति

स्टॉक का कमाल

उत्कर्ष सिंह

Indu

Ayush

Vidushi

Rohan

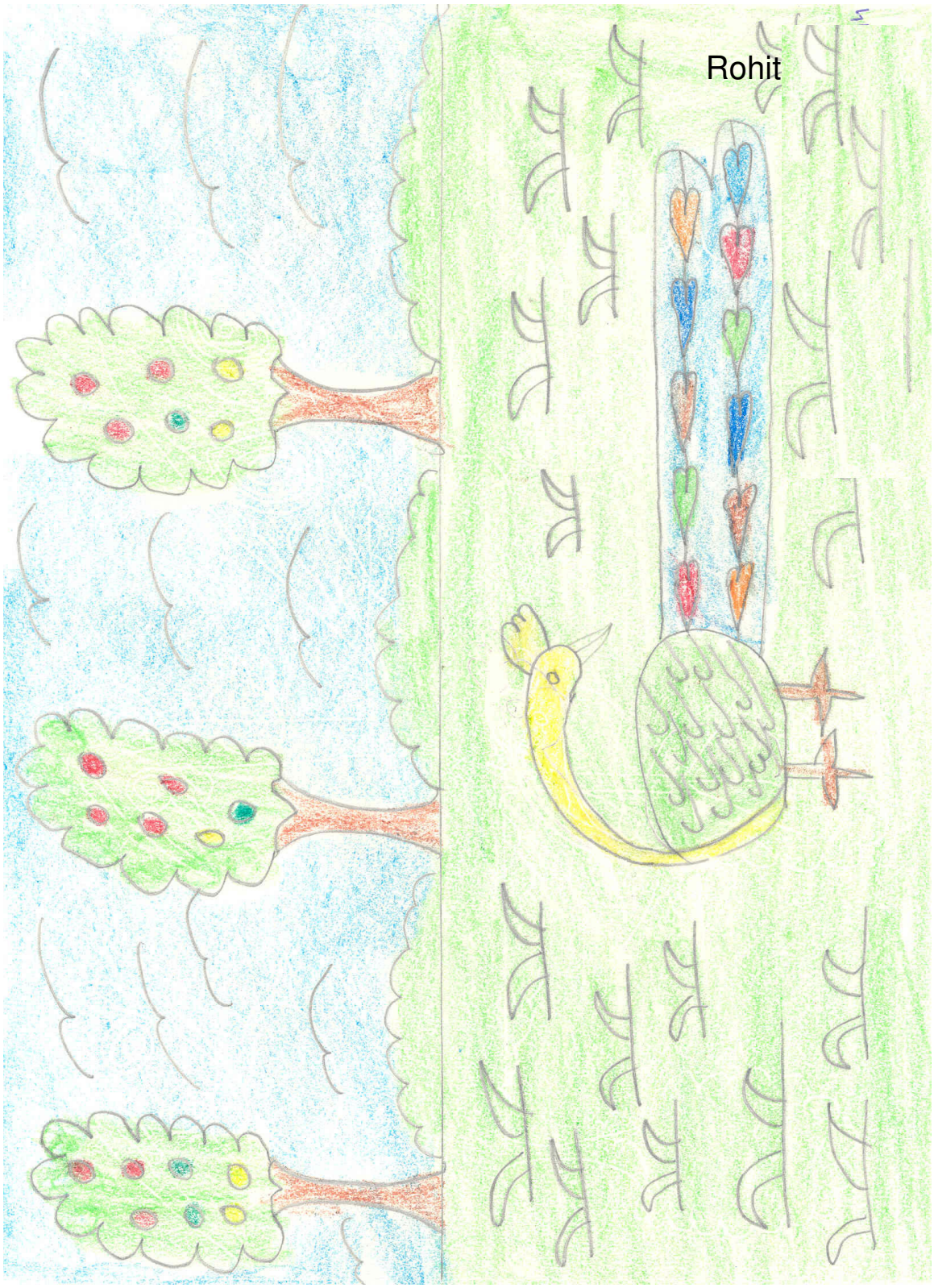
Rohit